किरदारे हुसैनी का पैरोकार मुन्तज़िर ज़ैदी

तज़हीब नगरौरी, लखनऊ

ज़ालिम कितने ही ताक़तवर क्यों न हों कितनी ही ज़्यादा तादाद में क्यों न हों, दुनिया कितनी ही मुसीबतों और परेशानियों का ठिकाना क्यों न बन गयी हो, फ़िज़ा कितनी ही ख़राब क्यों न हो निशानियाँ कितना ही यह बता रही हों कि बस जल्द ही दुनिया से ज़ालिम और जाबिर हाकिमों की दरिन्दगी का निशाना बन कर सीधे-सादे और बेगुनाह लोग ख़त्म हो जाएंगे।

लेकिन अलहम्दुलिल्लाह हर ज़माने की तारीख़ गवाह है कि हर ज़माने में हर फिरऔन के लिये एक मूसा रहा ''है'' और इन्शाअल्लाह मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] के सदक़े में रहेगा। अगर फिरऔन को उसकी 'ख़ुदाई' के साथ दरयाए नील में डुबो देने के लिए एक पैग़म्बर हज़रत मूसा[अ०] थे तो अबूजहल जैसे फ़िरऔन के ख़ात्मे के लिए शहरे इल्म रसूले अकरम हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] अपने ख़ानदान के साथ सामने आए। और जब यह सिलसिला ज़रा आगे बढ़ा तो यज़ीद जैसे सबसे बड़े आतंकवादी और फ़िरऔन के लिए नवास-ए-रसूल[स०] हज़रत इमाम हुसैन[अ०] अपने रिश्तेदारों और क़रीबी लोगों के साथ खड़े हुए और यज़ीद और उसके आतंकवाद का ख़ात्मा किया। इसी तरह इस ज़माने के सबसे बड़े आतंकवादी, ज़ालिम और जाबिर जार्ज बुश को उसका असली चेहरा दिखाने के लिए 14 दिसम्बर 2008[ई०] को बग़दाद में बेबाक इराक़ी पत्रकार ने उसके मुँह पर यह कहते हुए अपना दस नम्बरी जूता मारा कि ''ले कुत्ते इराक़ी अवाम की तरफ से अलविदायी तोहफ़ा'' यक़ीनन इस जूते ने ''बुश'' को हुश करके उसका असली चेहरा दिखा दिया। शायद इतनी गहरी चोट तलवार और गोली के वार से न लगती जितनी गहरी चोट मुन्तज़िर ज़ैदी के जूते ने लगायी। गोली की मार को शायद सिर्फ़ देखने और सुनने वाले ही याद रखते लेकिन यह जूते की मार बुश को ज़िन्दगी भर तड़पाती रहेगी।

मुन्तज़िर ज़ैदी ने जब बुश को जूते मारे उसके बाद मुन्तज़िर ज़ैदी गिरफ़्तार हो गये लेकिन उनकी हिम्मते मर्दाना की तारीफ़ में सभी हक़ परस्तों की ज़बाने मसरूफ़ है यहाँ तक कि उनको ''Man of the Year'' का ख़िताब भी मिला और मिलना भी चाहिए।

मुन्तज़िर ज़ैदी ने जितनी हिम्मत का काम जितनी आसानी से किया उसकी जितनी तारीफ़ की जाय कम है यक़ीनन इतना बड़ा कारनामा सिर्फ़ और सिर्फ़ वही इन्सान कर सकता है जिसकी नज़रों ने मुहम्मद[स०] व आले मुहम्मद[अ०] की सीरत को ग़ौर से देखा या पढ़ा हो। ऐसे कारनामे की उम्मीद किसी मुनाफ़िक़ से करना बेकार है। हम ज़ैदी को इस कामयाब एहतेजाजी क़दम बढ़ाने पर मुबारकबाद पेश करते है और तमाम लोगों से ये अपील करते हैं कि गाँव-गाँव शहर-शहर और मुल्क-मुल्क मुन्तज़िर ज़ैदी को जल्दी आज़ाद कराने के लिए एहतेजाज करें साथ ही हर साल 14 दिसम्बर को इस ऐतिहासिक दिन की याद ''यौमे शुजाअते मुन्तज़िर ज़ैदी'' के उनवान से मनाएं ताकि दुनिया के दूसरे बुश जैसे लोग कम से कम यही सोच कर या डरकर कि कहीं हमारे साथ भी यही सुलूक न हो जाए अपने को सुधारने की कोशिश करें।

मिटा दो ज़ुल्म जहाँ भी कहीं नज़र आए
मेरे ख़याल में ये भी है इन्तेक़ामे हुसैन[अ०]